

EK CHUP SO¹⁰⁰ SUKH (HINDI)

ख़ामोशी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल मुब़दासर व ज़ामेअ
मदनी गुलदस्ता



حُسْنُ السَّمْتِ فِي الصَّمْتِ

तर्जमा बनाम

एक चूप सो¹⁰⁰ सुख

(ख़ामोशी के फ़ज़ाइल)



-: मुअल्लिफ़ :-

इमाम जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सुयूती शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ

(अल मुतवप्फ़ा 911 हि.)



शो 'बा तराजिमे कुतुब

www.dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَأَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तर्जमा : ऐ **اللَّهُ** ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले ।

(मستطرف ज १ व १००) (दारالفकिरियुत)

नोट : अब्बल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना

बकीअ

व मगफ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या 'नी उस इल्म पर अमल न किया) (तारिख़ دمشق لابن عساکر ج १ ص १३८) (दारالفकिरियुत)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فَكُنُوْا بِاِلٰهِ مِنَ الشُّرَيْطِيْنَ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मजलिसे तशजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ येह रिसाला मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह गलती पाएं तो मजलिस को सफ़हा और सत्र नम्बर के साथ **Sms, E-mail, Whats App** या **Telegram** के ज़रीए इत्तिलाअ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्लिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबिता न फ़रमाएं!!!

 ...राबिता :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद-1, गुजरात (हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिब्दी रस्मुल ख़त (लीपियांतर) ख़ाका

| | | | | | | |
|--------|--------|--------|--------|---------|--------|--------|
| थ = تھ | त = ت | फ = ف | प = پ | भ = بھ | ब = ب | अ = ا |
| छ = چ | च = چ | झ = جھ | ज = ج | स = س | ठ = ٹھ | ट = ٹ |
| ज़ = ز | ढ = ڈھ | ड = ڈ | ध = دھ | द = د | ख = خ | ह = ح |
| श = ش | स = س | ज़ = ز | ज़ = ز | ढ़ = ڈھ | ड़ = ڈ | र = ر |
| फ़ = ف | ग़ = غ | अ = ع | ज़ = ج | त = ط | ज़ = ض | स = س |
| म = م | ल = ل | घ = گھ | ग = گ | ख = کھ | क = ک | क़ = ق |
| ी = ئی | و = و | आ = آ | य = ی | ह = ه | व = و | ن = ن |

الْحَمْدُ لِلَّهِ وَكَفَى وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَىٰ

तमाम ता'रीफ़ें **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये हैं, वोही काफ़ी है और
उस के चुने हुवे बन्दों पर सलाम हो

हज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान सुयूती शाफ़ेई
عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ फ़रमाते हैं : इस उम्दा किताब को मैं ने हज़रते सय्यिदुना
इमाम अबू बक्र इब्ने अबी दुन्या **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ** की “किताबुस्समत्” से
तल्ख़ीस किया है और इस में कुछ इज़ाफ़ात भी किये हैं। मैं ने इस का
नाम “हुस्नुस्समत् फ़िस्समत्” (या'नी ख़ामोशी के बारे में उम्दा तरीक़ा)
रखा है। **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** ही दुरुस्ती की तौफ़ीक़ देने वाला है।

ख़ामोशी में नजात है

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَىٰ عَنْهُمَا** बयान
करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया :
“जो चुप रहा उस ने नजात पाई।”⁽¹⁾

सलामती चाहने वाला ख़ामोश रहे

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَىٰ عَنْهُ** बयान
करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया :
“जो सलामत रहना चाहता है उस पर ख़ामोशी लाज़िम है।”⁽²⁾

1...ترمذی، کتاب صفة القيامة، ۲/ ۲۲۵، حدیث: ۲۵۰۹

2...مسند ابی یعلیٰ، مسند انس بن مالک، ۳/ ۲۷۱، حدیث: ۳۵۹۵

बदन पर हल्का और मीज़ान में भारी

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गि़फ़ारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : “क्या मैं तुम्हें ऐसा अमल न बताऊं जो बदन पर हल्का और मीज़ाने अमल में भारी हो ?” मैं ने अर्ज़ की : क्यूं नहीं ! इरशाद फ़रमाया : “वोह ख़ामोश रहना, हुस्ने अख़्लाक़ अपनाना और फुज़ूल कामों को छोड़ना है ।”⁽¹⁾

आसान इबादत

हज़रते सय्यिदुना सफ़वान बिन सुलैम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं तुम्हें ऐसी इबादत के बारे में न बताऊं जो बहुत आसान और बदन पर निहायत हल्की हो ? वोह ख़ामोशी और हुस्ने अख़्लाक़ है ।”⁽²⁾

ख़ामोश रहने की नसीहत

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गि़फ़ारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मुझे कोई नसीहत फ़रमाइये । आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं तुम्हें हुस्ने अख़्लाक़ अपनाने और ख़ामोश रहने की नसीहत करता हूं, येह दोनों अमल बदन पर सब से हल्के और मीज़ान (Scale) में बहुत भारी हैं ।”⁽³⁾

1... موسوعة ابن ابى الدنيا، كتاب الصمت واداب اللسان، ٨٤/٤، حديث: ١١٢

2... موسوعة ابن ابى الدنيا، كتاب الصمت واداب اللسان، ٨٤/٤، حديث: ٢٤

3... كنز العمال، كتاب الاخلاق، من قسم الافعال، ٢٦٥/٣، حديث: ٨٢٠٢

सब से उम्दा और आसान अमल

हज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبْرَى से रिवायत है कि हज़ुरे पुरनूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक सहाबी से इरशाद फ़रमाया : “क्या मैं तुम्हें सब से उम्दा और सब से आसान अमल के बारे में न बताऊं ?” सहाबी ने अर्ज की : मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! क्यूं नहीं ! ज़रूर इरशाद फ़रमाइये । इरशाद फ़रमाया : “वोह हुस्ने अख़्लाक और तवील ख़ामोशी है इन दोनों को लाज़िमी इख़्तियार कर लो क्यूंकि तुम **اَعْوَابُ** की बारगाह में इन जैसा (या'नी इन से अफ़ज़ल) कोई और अमल नहीं ले जा सकते ।”⁽¹⁾

सब से बुलन्द इबादत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ख़ामोशी सब से बुलन्द इबादत है ।”⁽²⁾

अ़ालिम की जीनत और जाहिल का पर्दा

हज़रते सय्यिदुना मुहरिज़ बिन जुहैर अस्लमी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ख़ामोशी अ़ालिम की जीनत और जाहिल का पर्दा है ।”⁽³⁾

1...موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب الصمت واداب اللسان، ٤/ ٣٢٦، حديث: ٦٥٠

2...تاريخ اصبهان لابی نعیم، ٢/ ٣٢، رقم: ٩٩٩، عبداللّٰه بن محمد بن موسى البازيار

3...جامع الصغير، ص ٣١٨، حديث: ٥١٥٩، ابو الشیخ عن محرز بن زهير

ख़ामोशी अख़लाक़ की सरदार है

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ख़ामोशी अख़लाक़ की सरदार है ।”⁽¹⁾

बात दो ज़ख़ में ओंधे मुंह गिराएगी

हज़रते सय्यिदुना उबादा बिन सामित رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ एक रोज़ घर से बाहर तशरीफ़ लाए और सुवारी पर सुवार हुवे तो हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ की : कौन सा अमल सब से अफ़ज़ल है ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने मुबारक मुंह की तरफ़ इशारा कर के इरशाद फ़रमाया : “नेकी की बात के इलावा ख़ामोश रहना ।” अर्ज़ की : हम ज़बान से जो कुछ बोलते हैं क्या उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी पकड़ फ़रमाएगा ? तो सरकारे दो ज़हान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन की रान पर हाथ मारते हुवे इरशाद फ़रमाया : “ऐ मुआज़ ! तुम्हें तुम्हारी मां रोए !⁽²⁾ ज़बानों का कहा हुवा ही लोगों को ओंधे मुंह जहन्म में गिराएगा । पस जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अच्छी बात करे या बुरी बात से ख़ामोश रहे । (फिर इरशाद फ़रमाया :) अच्छी बात कही फ़ाएदे में रहोगे और बुरी बातों से ख़ामोश रहो सलामत रहोगे ।”⁽³⁾

...مسند الفردوس، ۲/ ۳۶، حدیث: ۳۶۶۶

2.....इस का ज़हिरी मा'ना तो यह है कि “तुम्हें मौत आ जाए” मगर अहले अरब यह जुम्ला अदब सिखाने, गुफ़्तत से बेदार करने और अपनी बात की अहम्मियत व अज़मत बयान करने के लिये बोला करते थे ।

(مرقاة المفاتيح، کتاب الایمان، الفصل الاول، ۱/ ۱۹۶، تحت الحدیث: ۲۹)
3...مستدرک حاکم، کتاب الادب، قولوا خیر انتموا... الخ، ۵/ ۳۰، حدیث: ۸۸۳۳، بتغییر قلیل

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

40 हज़ार अवलाद का इजतिमाअ ! (हिक्वयत)

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि नूर के पैकर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ **اَللّٰهُ** (عَزَّوَجَلَّ) ने जब हज़रते आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) को ज़मीन पर उतारा तो जितना **اَللّٰهُ** (عَزَّوَجَلَّ) ने चाहा उतना अर्सा आप ज़मीन पर रहे। एक रोज़ आप की अवलाद ने आप से कहा : ऐ वालिदे मोहतरम ! हम से गुफ़्तगू कीजिये। आप (عَلَيْهِ السَّلَام) ने अपने बेटों, पोतों और पड़पोतों के 40 हज़ार के मजमअ से ख़िताब करते हुवे इरशाद फ़रमाया : **اَللّٰهُ** (عَزَّوَجَلَّ) ने मुझे हुक्म दिया है कि ऐ आदम ! गुफ़्तगू कम करो येह अमल तुम्हें मेरे कुर्ब (या'नी जन्नत) की तरफ़ लौटा देगा। ”⁽¹⁾

अब्बा जान ! आप बोलते क्यों नहीं ? (हिक्वयत)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام जब ज़मीन पर भेजे गए तो आप की ख़ूब अवलाद हुई। एक दिन आप के बेटे, पोते और पड़पोते सब आप के पास जम्अ हो कर बातें करने लगे जब कि आप عَلَيْهِ السَّلَام ख़ामोश रहे और कोई गुफ़्तगू न फ़रमाई। अवलाद अर्ज गुज़ार हुई : अब्बा जान ! क्या बात है हम गुफ़्तगू कर रहे हैं और आप ख़ामोश हैं ? हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मेरे बेटो ! जब **اَللّٰهُ** (عَزَّوَجَلَّ) ने मुझे अपने कुर्ब (या'नी जन्नत) से ज़मीन पर उतारा तो मुझ से येह अहद लिया था कि ऐ आदम ! गुफ़्तगू कम करना यहां तक कि मेरे कुर्ब में लौट आओ।⁽²⁾

1-...تاريخ بغداد، 4/ 338، رقم: 3843؛ ابو علي مؤدب حسن بن شبيب

2-...تاريخ بغداد، 4/ 339، رقم: 3843؛ ابو علي مؤدب حسن بن شبيب

शैतान को भगाने का नुस्खा

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رضي الله تعالى عنه बयान करते हैं कि मक्की मदनी मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : “तुम पर नेकी की बात के इलावा तवील ख़ामोशी लाज़िम है क्यूंकि येह शैतान को तुम से दूर कर देगी और दीनी मुआमलात में तुम्हारी मददगार होगी।”⁽¹⁾

हिक्मत के 10 हिस्से

हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رضي الله تعالى عنه बयान करते हैं कि रसूले पाक صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इरशाद फ़रमाया : “हिक्मत के 10 हिस्से हैं नव हिस्से गोशा नशीनी (तन्हाई) में और एक ख़ामोशी में है।”⁽²⁾

न बोलने में नव गुन

हज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رضمة الله تعالى عليه फ़रमाते हैं : कहा जाता था कि हिक्मत (अक्लमन्दी-दानाई) के 10 हिस्से हैं नव हिस्से ख़ामोशी में और एक हिस्सा गोशा नशीनी (अलग थलग रहने) में है।

चुनान्चे, मैं ने अपने नफ़्स का इलाज किसी हद तक ख़ामोशी से करना चाहा लेकिन मुझे इस में कामयाबी न मिली फिर मैं ने गोशा नशीनी (तन्हाई) इख़्तियार की तो मुझे हिक्मत के नव हिस्से भी मिल गए (लिहाज़ा मा'लूम हुवा कि वाकेई हिक्मत के नव हिस्से गोशा नशीनी में हैं जैसा कि मा क़ब्ल हदीस में है)।

1... صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، ذکر الاستجاب للمراء... الخ، 1/ 284،

حدیث: 322

2... مسند الفردوس، 1/ 352، حدیث: 2593

हज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं :
एक दानिश्वर (अक्लमन्द व दाना आदमी) का कौल है कि इबादत या
हिक्मत के 10 हिस्से हैं नव हिस्से ख़ामोशी में और दसवां हिस्सा गोशा
नशीनी में है ।

शैतान से जीतने का नुस्खा

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं
कि मक्की मदनी आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :
“परहेज़गारी इख़्तियार करो येह हर भलाई का मजमूआ है और भलाई
की बात कहने के इलावा अपनी ज़बान बन्द रखो क्यूंकि इस के ज़रीए
तुम शैतान पर ग़ालिब रहोगे ।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना अक़ील बिन मुदरिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते
हैं कि एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से
अर्ज़ की : मुझे नसीहत कीजिये । फ़रमाया : “हक़ बात कहने के इलावा
चुप रहो कि इस के ज़रीए तुम शैतान पर ग़ालिब रहोगे (या’नी जीत
जाओगे) ।”

बिगैर पूछे जवाब मिल गया (हिक्कयत)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते
हैं कि हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام हज़रते सय्यिदुना लुक्मान
عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की मौजूदगी में अपने हाथ से ज़िरह (जंग में पहनने का लोहे
की जाली का लिबास) बनाते हुवे एक हल्के को दूसरे में डाल रहे थे, येह
देख कर हज़रते सय्यिदुना लुक्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن को बड़ा तअज्जुब हुवा
और चाहा कि उस के मुतअल्लिक पूछें मगर हिक्मत ने उन्हें पूछने से

१११: १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००

बाज़ रखा। फिर जब हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ज़ि़रह बनाने से फ़ारिग़ हुवे तो उसे पहन कर इरशाद फ़रमाया : “येह ज़ि़रह जंग के लिये क्या ख़ूब शै है !” येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना लुक़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने कहा : “ख़ामोशी हिक्मत है लेकिन इस पर अमल करने वाले कम हैं। मैं आप से पूछना ही चाह रहा था लेकिन ख़ामोश रहा फिर भी मुझे अपनी बात का जवाब मिल गया।”⁽¹⁾

कम बोलने वाले कम हैं

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक और हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ख़ामोशी हिक्मत है और इस पर अमल करने वाले कम हैं।”⁽²⁾

अफ़ज़ल ईमान

हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से अफ़ज़ल ईमान के बारे में पूछा तो इरशाद फ़रमाया : “अफ़ज़ल ईमान येह है कि तुम **اَللّٰهُ** के लिये महब्वत करो और उसी के लिये बुग़ज़ रखो और अपनी ज़बान **اَللّٰهُ** के ज़िक्र से तर रखो।” अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! इस के साथ और क्या है ? इरशाद फ़रमाया : “लोगों के लिये वोही पसन्द करो जो अपने लिये पसन्द करते हो और जो अपने

1... شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، فصل فی فضل السکوت عما لا ینبیه،

۲۶۳/۳، حدیث: ۵۰۲۶

2... مسند شهاب، الصمت حکم وقلیل فاعله، ۱/ ۲۸، حدیث: ۲۴۰

लिये ना पसन्द रखते हो वोह दूसरों के लिये भी ना पसन्द जानो और अच्छी बात करो या ख़ामोश रहो ।”(1)

“हुज़रा मुस्तफ़ा” किस के लिये ?

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तीन बार येह बात इरशाद फ़रमाई : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उस पर रहम फ़रमाए ! जो बात करता है तो फ़ाएदा (या'नी सवाब) पाता है और ख़ामोश रहता है तो सलामत रहता है ।”(2)

बे मिस्ल अमल

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को शरफ़े मुलाक़ात से नवाज़ा तो उन से इरशाद फ़रमाया : “ऐ अबू ज़र ! क्या मैं तुम्हें दो ऐसी ख़स्लतों के बारे में न बताऊं जो दीगर ख़स्लतों के मुक़ाबले में बदन पर हल्की और मीज़ाने अमल में भारी हों ?” अर्ज़ की : या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ज़रूर बताइये । इरशाद फ़रमाया : “हुस्ने अख़्लाक़ और तवील ख़ामोशी अपनाओ, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! मख़लूक़ का कोई अमल इन जैसा नहीं ।”(3)

...1. मसन्दामाम अहमद, मसन्दालानصار, حديث معاذ بن جبل، ۸/ ۲۶۶، حديث: ۲۲۱۹۳

...2. मसन्दहारث, باب رحم الله عبدا قال فغتم او سكت فسلم، ۱/ ۳۳۹، حديث: ۵۸۲

...3. मसन्दायी يعلى, مसन्दانس بن مالک، ۳/ ۱۷۴، حديث: ۳۲۸۵

कौम के सरदार को हुक्म

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله تعالى عنه बयान करते हैं कि एक शख्स ने बारगाहे रिसालत में हज़िर हो कर अर्ज की : या रसूलल्लाह صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ! मैं अपनी कौम का सरदार हूँ मैं उन्हें किस चीज़ का हुक्म दूँ ? इरशाद फ़रमाया : “उन्हें सलाम आ़म करने और ज़रूरी बात के इलावा ख़ामोश रहने का हुक्म दो ।”⁽¹⁾

आक्व बहुत ज़ियादा चुप रहते

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरह رضي الله تعالى عنه बयान करते हैं कि रसूले पाक صلى الله تعالى عليه وآله وسلم बहुत ज़ियादा ख़ामोश रहा करते थे⁽²⁾ ।⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना तारिक़ बिन अशयम رضي الله تعالى عنه बयान करते हैं कि हम बारगाहे रिसालत में बैठा करते थे, हम ने आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم से ज़ियादा तवील ख़ामोशी वाला कोई नहीं देखा और जब सहाबए किराम عليهم الرضوان ज़ियादा गुफ़्तगू करते तो आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم मुस्कुरा देते ।⁽⁴⁾

1...مكارم الاخلاق للخرائطي، باب حفظ اللسان... الخ، ص 92، حديث: 196

2.....عليه وحمدا لله القوي मुफ़स्सरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान नईमी मिरआतुल मनाजीह, जिल्द 8, स. 81 पर इस के तहत फ़रमाते हैं : ख़ामोशी से मुराद है दुन्यावी कलाम से ख़ामोशी वरना हुज़ूरे अक्दस (صلى الله تعالى عليه وآله وسلم) की ज़बान शरीफ़ **اَللّٰه** के ज़िक्र में तर रहती थी, लोगों से बिला ज़रूरत कलाम नहीं फ़रमाते थे, येह ज़िक्र है जाइज़ कलाम का, नाजाइज़ कलाम तो उम्र भर ज़बान शरीफ़ पर आया ही नहीं । झूट, गीबत, चुगली वगैरा सारी उम्र शरीफ़ में एक बार भी ज़बाने मुबारक पर न आए । हुज़ूर (صلى الله تعالى عليه وآله وسلم) सरापा हक़ हैं, फिर आप तक बातिल की रसाई कैसे हो !

3...مسند امام احمد، مسند البصريين، حديث جابر بن سمرة، 4/ 204، حديث: 8360

4...معجم كبير، 8/ 320، حديث: 8198

चार बेहतरीन मदनी फूल

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رضي الله تعالى عنه बयान करते हैं कि मुस्तफ़ा जाने रहमत صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इरशाद फ़रमाया : “चार बातें ऐसी हैं जो किसी एक शख्स में शाज़ो नादिर (या'नी कम) ही जम्अ हो सकती हैं : (1) ख़ामोशी जो इबादत की बुन्याद है (2) **अल्लाह** عز وجل की ख़ातिर अज़िज़ी (3) दुन्या से बे रग़बती और (4) क़नाअत ।”⁽¹⁾

अच्छी बात करो या चुप रहो

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा और हज़रते सय्यिदुना शुरैह ख़ुज़ाई رضي الله تعالى عنهم बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इरशाद फ़रमाया : “जो **अल्लाह** عز وجل और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अच्छी बात करे या ख़ामोश रहे ।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عنه رحمه الله القوي बयान करते हैं : हमें येह बात बताई गई है कि रसूलुल्लाह صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का इरशाद है कि “**अल्लाह** عز وجل उस बन्दे पर रहम फ़रमाए ! जो बोलता है तो फ़ाएदा (या'नी सवाब) पाता है और ख़ामोश रहता है तो सलामत रहता है ।”⁽³⁾

1... موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب الصمت واداب اللسان، 4/ 311،

حدیث: 560، بتغیر قلیل

2... بخاری، کتاب الادب، باب اکرام الضیف... الخ، 2/ 132، حدیث: 6135،

6136، عن ابي هريرة

3... شعب الايمان، باب حفظ اللسان، فصل في فضل السكوت عمالايغيبه،

2/ 21، حدیث: 933

ख़ामोशी में सलामती है (अक्वाले सहाबा)

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ** फ़रमाते हैं : अपने आप को छुपाओ तुम्हारा (बुरा) तज़क़िरा नहीं किया जाएगा और चुप रहो सलामत रहोगे। हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसरूद **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाया करते : ऐ ज़बान ! अच्छी बात कर फ़ाएदे में रहेगी और बोल मत कि नदामत (शर्मिन्दगी) से पहले सलामत रहेगी। हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** फ़रमाया करते : ऐ ज़बान ! अच्छी बात कह, तुझे फ़ाएदा होगा और बुरी बात कहने से ख़ामोश रह, सलामती में रहेगी।

हक़ बात करो या चुप रहो

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** बयान करते हैं कि एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : मुझे नसीहत कीजिये। फ़रमाया : गुफ़्तगू मत करो। उस ने अर्ज़ की : जो लोगों के दरमियान रहता है उसे बात चीत किये बिगैर चारह नहीं। फ़रमाया : अगर गुफ़्तगू करनी ही हो तो हक़ बात कहो या ख़ामोश रहो।

जन्नत में ले जाने वाला अमल

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उयैना **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह **رُحْمَةُ السَّلَامِ وَالصَّلَاةُ وَعَلَيْهِ السَّلَامُ** की बारगाह में लोगों ने अर्ज़ की : हमें ऐसा अमल बताइये जिस के सबब हम जन्नत में दाख़िल हो जाएं। इरशाद फ़रमाया : कभी मत बोलो। लोगों ने अर्ज़ की :

हम इस की ताक़त नहीं रखते। इरशाद फ़रमाया : “तो फिर अच्छी बात के इलावा कुछ न बोलो।”

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ** बयान करते हैं कि ख़ामोशी महबूबत का सबब है।

हिक्मत की अस्ल

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** बयान करते हैं : तमाम अतिब्बा (या'नी इलाज करने वालों) का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि तिब्ब (या'नी इलाज के फ़न) की बुन्याद परहेज़ है और तमाम हुकमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि हिक्मत (या'नी अक्लमन्दी) की बुन्याद ख़ामोशी है।

गुफ़्तगू चांदी तो ख़ामोशी सोना

हज़रते सय्यिदुना सुलैमान **عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने इरशाद फ़रमाया : “अगर गुफ़्तगू चांदी है तो ख़ामोशी सोना है।”

कौन सी गुफ़्तगू चांदी है ?

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से जब हज़रते सय्यिदुना लुक़्मान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** के उस कौल के बारे में पूछा गया जो इन्होंने ने अपने बेटे से फ़रमाया था कि अगर गुफ़्तगू करना चांदी है तो ख़ामोश रहना सोना है तो आप ने फ़रमाया : “अगर **عَزَّوَجَلَّ** की फ़रमां बरदारी पर मुशतमिल गुफ़्तगू चांदी है तो उस की ना फ़रमानी वाली बात से ख़ामोशी इख़्तियार करना सोना है।”

सोहबत के लिये मुफ़ीद शख़्स

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَزِيزِ फ़रमाते हैं : “जब तुम किसी बन्दे को बहुत ज़ियादा ख़ामोश और लोगों से दूर रहने वाला देखो तो उस के क़रीब हो जाओ क्यूंकि उसे हिक्मत दी गई है।”

नबी की आजिजी मगर हमारे लिये दर्से इब्रत

हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ इरशाद फ़रमाते हैं : “मैं गुफ़्तगू कर के कई बार नादिम (या'नी शर्मिन्दा) हुवा लेकिन ख़ामोशी पर कभी नादिम नहीं हुवा।”

हज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मैं ने गोशा नशीनी को ज़बान की ख़ामोशी में पाया है।”

इबादत की कुन्जी

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “कहा जाता था कि तवील (या'नी दराज़) ख़ामोशी इबादत की कुन्जी है।”

इबादत की इब्तिदा ख़ामोशी है फिर....

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “इबादत की इब्तिदा ख़ामोश रहना है, फिर इल्म हासिल करना फिर इसे याद करना फिर इस पर अमल करना और फिर इसे फैलाना।”

पहले के नेक लोग कम गो हुवा करते

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुजाहिद **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد** फ़रमाते हैं :
“सलफ़े सालिहीन (या'नी पहले के गुज़रे हुवे नेक लोग) कम गुफ़्तगू किया करते थे ।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन शुरैह **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : “अगर आदमी अपने लिये कुछ इख़्तियार करता तो ख़ामोशी से अफ़ज़ल कोई शै इख़्तियार न करता ।”

अक्लमन्द की ज़ीनत

हज़रते सय्यिदुना मूसा बिन अली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي** फ़रमाते हैं :
“बनी इस्राईल के एक राहिब (या'नी दुन्या से अलग थलग इबादत में मशगूल शख़्स) का कौल है कि औरत की ज़ीनत शर्मो हया और अक्लमन्द की ज़ीनत ख़ामोशी है ।”

ख़ामोश रहने वाला अ़ालिम अफ़ज़ल या बोलने वाला ? (हिक़ायत)

हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह ख़रशी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي** फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَزِيْز** के पास आने वाले एक अ़ालिम साहिब को येह फ़रमाते सुना कि ख़ामोश अ़ालिम बोलने वाले अ़ालिम की तरह है । हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَزِيْز** ने फ़रमाया : मैं येह ख़याल करता हूँ कि बोलने वाला अ़ालिम क़ियामत के दिन ख़ामोश रहने वाले अ़ालिम से अफ़ज़ल होगा क्यूँकि बोलने वाले का नफ़अ लोगों को पहुंचता है जब कि ख़ामोश रहने वाले अ़ालिम को सिर्फ़ ज़ाती फ़ाएदा हासिल होता है । उस

अल्लिम साहिब ने कहा : “अमीरुल मोमिनीन ! तो फिर गुफ़्तगू की आजमाइश किस क़दर होगी ?” यह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फूट फूट कर रोने लगे ।

हज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम खौलानी قُدَيْسِ رِثَاءُ النُّورَانِ फ़रमाते हैं : “रोज़ादार की नींद तस्बीह है और रोज़ादार वोही है जो चुप रहे और फुज़ूल बातें न करे ।”

चार उलमा और एक बादशाह (हिक्कयत)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : एक बादशाह के हां चार उलमाए किराम जम्अ हुवे तो बादशाह ने उन से अर्ज की : आप हज़रात एक एक मुख़्तसर और जामेअ बात इरशाद फ़रमाइये । उन में से एक ने फ़रमाया : उलमा का अफ़ज़ल इल्म “ख़ामोशी” है । दूसरे ने कहा : आदमी के लिये सब से बढ कर नफ़अमन्द बात यह है कि वोह अपनी हैसियत और अक्ल की इन्तिहा (गहराई) को जान ले और उस के मुताबिक़ गुफ़्तगू करे । तीसरे ने फ़रमाया : सब से बढ कर मोहतात वोह शख़्स है जो न तो मौजूदा ने'मत पर मुतमइन हो, न उस पर भरोसा करे और उस के लिये कोई तक्लीफ़ भी न उठाए । चौथे ने फ़रमाया : तक्दीर पर राज़ी रहने और क़नाअत इख़्तियार करने से बढ कर कोई शै बदन के लिये आराम देह नहीं ।

ज़ियादा बोलने से वक़ार जाता रहता है

हज़रते सय्यिदुना अबू मुसहिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الظَّاهِرِ फ़रमाते हैं : “ख़ामोशी नेक लोगों की दुआ है । हज़रते सय्यिदुना सअसा बिन सूहान رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّانِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “ख़ामोशी मुरव्वत की बुन्याद है ।” हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन नज़्र हारिसी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाया करते थे : “ज़ियादा गुफ़्तगू करने से वक़ार चला जाता है ।”

ख़ामोशी के दो फ़ाउदे

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَهَّابِ फ़रमाते हैं : “ख़ामोशी से आदमी को दो चीज़ें हासिल होती हैं :

(1) दीन में सलामती और (2) दूसरे की बात समझना ।”

हज़रते सय्यिदुना फुजैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : (नफ़ल) हज़, जिहाद और इस्लामी सरहद पर पहरा देना भी ज़बान की हिफ़ाज़त से अफ़ज़ल नहीं ।

लोगों में अन्धे बहरे गूंगे बन कर रहो (हिक्कयत)

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से एक शख़्स ने अर्ज़ की : लोगों के मुआमलात देख कर मेरा दिल कहता है कि उन से मेल जोल न रखूं। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “ऐसा न करो क्यूंकि लोगों को तुम्हारी और तुम्हें लोगों की ज़रूरत है अलबत्ता तुम उन के दरमियान सुनने वाले बहरे, देखने वाले अन्धे और बोलने की सलाहियत रखने के बा वुजूद गूंगे बन जाओ ।”

ख़ामोशी के वक़्त अक्ल हाज़िर रहती है

हज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : आदमी जब ख़ामोश रहता है तो उस की पूरी अक्ल मुकम्मल तौर पर हाज़िर रहती है ।

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَزِيزِ फ़रमाते हैं : “जो अपनी गुफ़्तगू को भी अपना अमल शुमार करता है वोह कम बोलता है ।”

चार बादशाह (हिक्कयत)

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अय्याश رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : चार मुल्कों फ़ारिस, रूम, हिन्द और चीन के बादशाह एक जगह जम्अ हुवे और चारों बादशाहों ने चार ऐसी बातें कीं गोया एक ही कमान से चार तीर फेंके हों, एक ने कहा : मैं कही हुई बात के मुक़ाबले में न कही हुई बात से रुकने पर ज़ियादा क़ादिर हूँ। दूसरे ने कहा : जो बात मैं ने मुंह से निकाल दी वोह मुझ पर हावी और जो बात मुंह से न निकाली उस पर मैं हावी हूँ। तीसरे ने कहा : मुझे न की हुई बात पर कभी नदामत (शर्मिन्दगी) नहीं हुई, अलबत्ता की हुई बात पर ज़रूर शर्मिन्दा हुवा हूँ। चौथे ने कहा : मुझे बोलने वाले पर तअज़्जुब है कि अगर वोही बात उस की तरफ़ लौट जाए तो उसे नुक़सान दे और अगर न लौटे तो फ़ाएदा भी न दे।

उन की ज़बानों पर हिक्मत भरी बातें जारी हुई

हज़रते सय्यिदुना अबू अली रूज़बारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي फ़रमाते हैं : अक्लमन्द व दानिश्वर लोग ख़ामोश रहने और ग़ौरो फ़िक्र के सबब हिक्मत के वारिस हुवे तो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की ज़बानों पर ऐसी हिक्मत भरी बातें जारी कर दीं कि उन्हें उन के और उन के परवर दगार **अज़्ज़ल** के इलावा कोई नहीं जानता।

सय्यिदुना इब्राहीम बिन अब्दहम ख़ामोश रहे (हिक्कयत)

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन बश्शार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَطَّار फ़रमाते हैं : एक मरतबा हम कुछ लोग इकठ्ठे हुवे तो हम में से हर एक ने कुछ न

कुछ गुफ़्तगू की मगर हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** ख़ामोश रहे, आप ने कोई बात न की। जब लोग चले गए तो मैं ने इस बात पर उन से ना गवारी का इज़हार किया तो आप ने फ़रमाया : “गुफ़्तगू बे वुकूफ़ की बे वुकूफी और अक्लमन्द की अक्लमन्दी को ज़ाहिर करती है।” मैं ने कहा : फिर आप ने गुफ़्तगू क्यूं न की ? फ़रमाया : “मुझे ख़ामोश रह कर ग़मज़दा होना गुफ़्तगू कर के नादिम होने से ज़ियादा प्यारा है।”

ख़ामोशी ही सब्र है

हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي** फ़रमाते हैं : “सब्र ख़ामोशी और ख़ामोशी ही सब्र है और गुफ़्तगू करने वाला ख़ामोश रहने वाले से ज़ियादा परहेज़गार नहीं सिवाए ऐसे अ़ालिम के जो गुफ़्तगू के मौक़अ पर गुफ़्तगू करे और ख़ामोश रहने के मौक़अ पर ख़ामोश रहे।

ख़ामोशी क़ अदना फ़ाएदा सलामती है

हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन ख़ल्लाद **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के वालिदे माजिद फ़रमाते हैं : ख़ामोशी का अदना (या'नी कम अज़ कम) फ़ाएदा सलामती और बोलने का अदना नुक़सान नदामत व शर्मिन्दगी है। फुज़ूल बातों से चुप रहना सब से बड़ी हिक्मत है और बिगैर इल्म के बोलने वाला ग़लती से बच नहीं सकता और ना मा'लूम बात से ख़ामोश रहने वाला भी हिक्मत से ख़ाली नहीं।

कमाले अदब की चार ख़ूबियां

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन अब्दुल्लाह **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : येह चार ख़ूबियां हों तो “अदब” अपने कमाल को पहुँच जाता है :

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

- (1) तौबा (2) नफ़स को ख़्वाहिशात से रोकना (3) ख़ामोशी और
(4) गोशा नशीनी ।

कामिल मोमिन की चार ख़ूबियां

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं :
मन्कूल है कि मोमिन उस वक्त (कामिल) मोमिन होता है जब वोह
तवील ख़ामोशी वाला हो, उस की गुफ़्तगू अच्छी हो, झूट न बोलता हो
और परहेज़गारी में मुख़्लिस हो (दिखावा और रियाकारी से बचता हो) ।

लोगों के दरमियान एहतियात के मद्दनी फूल

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم
फ़रमाते हैं : मजलिस में (या'नी लोगों के दरमियान हों तो) एहतियात
और दूर अन्देशी (या'नी अक्लमन्दी) येह है कि ग़लती से बचने के
लिये ब क़दरे ज़रूरत ही बात की जाए । तुम जब किसी चीज़ का हुक्म
दो तो यकीन के साथ दो, जब सुवाल करो तो वाज़ेह सुवाल करो, जब
किसी चीज़ को त़लब करो तो अच्छे तरीके से त़लब करो और जब
किसी चीज़ की ख़बर दो तो तहकीक के बा'द दो और ज़ियादा बातें
करने और गुफ़्तगू में बे जा मिलावट से बचो क्यूंकि जो ज़ियादा
बोलता है वोह ग़लतियां भी ज़ियादा करता है ।

क्या बात करने वाला भी नजात पाएगा ?

हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : हज़रते
सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन औन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ख़ामोश रहा करते थे । उन
से अर्ज़ की गई : आप बात क्यूं नहीं करते ? फ़रमाया : “क्या बात करने
वाला भी नजात पाएगा ?”

हज़रते सय्यिदुना इस्हाक़ बिन ख़लफ़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं :
 “गुफ़्तगू में एहतियात बरतना सोने चांदी के मुआमले में एहतियात करने से ज़ियादा सख़्त है ।

20 साल से चुप रहने की मश्क़

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अबू ज़करिय्या दिमशक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : मैं 20 साल तक फुज़ूल बातों से बचने के लिये ख़ामोशी अपनाने की कोशिश करता रहा लेकिन अपने मक़सद में कामयाब न हो सका । हज़रते सय्यिदुना मुवर्रिक् इज़ली وَلِيُّ رَحْمَةِ اللَّهِ फ़रमाते हैं : मैं 20 साल से एक चीज़ को हासिल करने में लगा हुआ हूँ लेकिन अभी तक कामयाब नहीं हुआ मगर मैं फिर भी उसे हासिल करने में लगा रहूंगा । किसी ने पूछा : वोह क्या है ? फ़रमाया : फुज़ूल बातों से ख़ामोशी ।

40 साल तक मुंह में पथ्थर रखा !

हज़रते सय्यिदुना अरताह बिन मुन्ज़िर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने 40 साल तक मुंह में पथ्थर रख कर ख़ामोश रहना सीखा सिर्फ़ खाने, पीने और सोने के लिये ही मुंह से पथ्थर निकालता था ।

फाड़ खाने वाला दरिन्दा

एक कुरैशी बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : किसी आलिम साहिब से पूछा गया कि आप ख़ामोश क्यूं रहते हैं ? फ़रमाया : मैं ने अपनी ज़बान को फाड़ खाने वाला दरिन्दा पाया है, मुझे डर है कि अगर मैं इसे खुला छोड़ दूंगा तो येह मुझे काट खाएगा ।

हवा में चलने वाला आदमी (हिक्कयत)

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं :
 बनी इस्राईल में दो बुजुर्ग इबादत के ऐसे मर्तबे पर फ़ाइज़ थे कि पानी पर
 चलते थे। एक मरतबा वोह समुन्दर पर चल रहे थे कि उन्होंने ने एक
 बुजुर्ग को देखा कि वोह हवा में चल रहे हैं। उन से पूछा : ऐ **अब्बाह**
عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! आप इस मक़ाम तक कैसे पहुंचे ? उन्होंने ने फ़रमाया :
 थोड़ी दुन्या पर राज़ी रह कर, मैं ने अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात और
 ज़बान को फुज़ूल बातों से रोका और उन कामों में मशगूल हो गया जिन
 का परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** ने मुझे हुक्म दिया और मैं ने ख़ामोशी को अपनाए
 रखा। अगर मैं **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** पर किसी बात की क़सम खा लूं तो वोह
 मेरी क़सम पूरी फ़रमा दे और अगर उस से मांगूं तो वोह मुझे अता कर दे।

परन्दा बोल कर फंस गया ! (हिक्कयत)

हज़रते सय्यिदुना मख़्लद **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد** फ़रमाते हैं : बनी
 इस्राईल में एक शख़्स था जो अक्सर ख़ामोश रहा करता था।
 बादशाह ने इस की वजह पूछने के लिये किसी को उस के पास भेजा
 मगर उस ने कोई बात न की, फिर बादशाह ने लोगों के साथ उसे
 शिकार के लिये भेजा शायद कोई शिकार नज़र आए तो वोह बोले।
 लोगों ने एक परन्दे को जोर से चिल्लाते देखा तो जल्दी से उस की
 तरफ़ बाज़ छोड़ा जिस ने जा कर उसे पकड़ लिया। येह देख कर उस
 शख़्स ने कहा : हर शै के लिये ख़ामोशी अच्छी (कि इस में सलामती)
 है यहां तक कि परन्दों के लिये भी।

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبِيرِ फ़रमाते हैं :
सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मजलिस में जो ज़ियादा ख़ामोश होता
वोही उन के नज़दीक सब से अफ़ज़ल होता ।

दो बेहतरीन ख़ूबियां

हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन अबू कसीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبِيرِ फ़रमाते
हैं : दो चीज़ें (या'नी ख़ूबियां) जिस शख़्स में देखो तो जान लो कि इन
दो के इलावा भी उस की सारी सिफ़ात अच्छी होंगी : (1) ज़बान को
काबू में रखना और (2) नमाज़ की हिफ़ाज़त करना ।

बड़ी हिक्मत

हज़रते सय्यिदुना अबू सलमह सनआनी قَدِيسُ سُرَّةِ الثُّورَانِ फ़रमाते
हैं : “कम बोलना बड़ी हिक्मत है लिहाज़ा ख़ामोशी इख़्तियार करो
कि येह उम्दा परहेज़गारी है, इस से बोझ हल्का और गुनाहों में कमी
रहती है ।”

ख़ामोशी सीखने की ज़ियादा ज़रूरत है

हज़रते सय्यिदुना मरवान बिन मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبِيرِ बयान
करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبِيرِ
से अर्ज़ की गई कि फुलां शख़्स इल्मे नहव सीख रहा है तो आप ने
फ़रमाया : “उसे ख़ामोशी सीखने की ज़ियादा ज़रूरत है ।”

बोलने से ज़ियादा सुनने की हिर्श रखो !

हज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : जिस तरह
गुफ़्तगू करना सीखते हो इसी तरह ख़ामोश रहना भी सीखो क्यूंकि

ख़ामोशी बहुत बड़ी हिक्मत है, बोलने से ज़ियादा सुनने की हिंस रखो और फुज़ूल चीज़ों के बारे में बात चीत बिल्कुल मत करो ।

इबादत के नव हिस्से ख़ामोशी में हैं

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : इबादत के 10 हिस्से हैं, नव हिस्से ख़ामोशी में और दसवां हिस्सा हलाल कमाने में है ।⁽¹⁾

अफ़ियत के नव हिस्से

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا बयान करते हैं कि रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : ख़ैरो अफ़ियत के 10 हिस्से हैं नव हिस्से ख़ामोशी में और दसवां गोशा नशीनी में है ।⁽²⁾

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ फ़रमाते हैं : ज़ियादा ख़ामोश रहने से हैबत पैदा होती है ।

बोलना दवा की तरह है

हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन आस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : बात करना दवा की तरह है जिसे तू थोड़ी लेगा तो नफ़अ देगी और अगर बहुत ज़ियादा लेगा तो तुझे मार डालेगी ।

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा मौला मुशिकल कुशा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ फ़रमाते हैं : “जब अक्ल मुकम्मल हो जाती है तो बोलना कम हो जाता है ।”

१...مسند الفردوس، ۲/ ۸۶، حدیث: ۴۰۶۲

२...مسند الفردوس، ۲/ ۸۵، حدیث: ۴۰۵۲

मन्कूल है कि “ख़ामोशी सलामती की कुन्जी है।”

बादशाह बहराम और परन्दा

मन्कूल है कि बादशाह बहराम एक रात किसी दरख़्त के नीचे बैठा था कि उस ने दरख़्त से एक परन्दे की आवाज़ सुनी तो उसे तीर मार कर गिरा दिया फिर कहा : ज़बान की हिफ़ाज़त इन्सान और परन्दे दोनों के लिये मुफ़ीद है अगर येह अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करता (और बोल न पड़ता) तो हलाक न होता।

ज़बान एक और क्वन दो क्यूं ?

यूनानी दानिश्वर बुक़रात ने एक शख़्स को बहुत ज़ियादा बोलते सुना तो कहा : ऐ फुलां ! **اَللّٰهُمَّ** **عَرِّجْ** ने इन्सान के लिये ज़बान एक और कान दो बनाए हैं ताकि बोले कम और सुने ज़ियादा।

हज़रते सय्यिदुना फुजैल बिन इयाज़ **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : “गुफ़्तगू करने वाले पर हमें आफ़ात का ख़ौफ़ है।”

ख़ामोशी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल अरबी अश्आर के तर्जमे

नफ़स के लिये बेहतरीन सरमाया

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : मैं अपने नफ़स की तरबियत करने लगा तो ख़ौफ़े इलाही के बा’द हर हाल में झूट और लोगों की ग़ीबत से बचे रहने को नफ़स के लिये बेहतरीन अदब व सरमाया पाया। झूट और ग़ीबत को **اَللّٰهُمَّ** **عَرِّجْ** ने अपनी किताबों में हराम फ़रमाया है। मैं ने रिज़ामन्दी और ना गवारी

दोनों हालतों में नफ़्स से कहा : इल्म और बुर्दबारी (या'नी सब्रो तहम्मूल) शरीफ़ आदमी की जीनत हैं। ऐ नफ़्स ! अगर तेरा बात करना चांदी है तो ख़ामोश रहना सोना है।

तमाम भलाई ख़ामोशी और गोशा नशीनी में है

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन इस्माईल फ़कीह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “तमाम की तमाम भलाई ख़ामोशी और गोशा नशीनी में है अगर यह दोनों तुम करना चाहते हो तो थोड़ी ग़िज़ा पर क़नाअत करो।”

दुनिया व आख़िरत में लाइके ता'रीफ़

एक शाइर ने कहा : (1) लोग कहते हैं : तुम बहुत ख़ामोश रहते हो। मैं ने उन से कहा : मेरी ख़ामोशी गूंगेपन या बे बसी की वज्ह से नहीं है (2) ख़ामोशी दुनिया व आख़िरत में लाइके ता'रीफ़ है और मुझे सख़्त बात करने से ख़ामोश रहना ज़ियादा पसन्द है (3) लोगों में से किसी ने कहा : आप ठीक कहते हैं मगर अच्छी बात करने में क्या हरज है ? मैं ने कहा : तुम मुझे खूँ ख़्वार बनाने का इरादा कर रहे हो (4) जो नेकी को जानते ही नहीं मैं उन के सामने नेकी की क्या बात करूँ ! क्या मैं अन्धों के सामने अन्धेरे में मोती फैलाऊँ ?

बोल पड़ना बारहा “टेक्शन” में डाल देता है !

हज़रते सय्यिदुना अबू हातिम मुहम्मद बिन हिब्बान बुस्ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ज़नजी बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي ने मुझे यह अशआर सुनाए :

(1) तुम ख़ामोशी की वज्ह से फिसलने से महफूज़ रहोगे और ज़ियादा

बोलने की वजह से ख़ौफ़ज़दा हो जाओगे (2) ऐसी बात कभी मत करो जिस के बाद तुम्हें येह कहना पड़े कि काश ! मैं ने येह बात न की होती ।

सब से बड़ा मरीज़

हज़रते सय्यिदुना सालेह बिन जनाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : लोगों में सब से ज़ियादा मुसीबत ज़दा, सब से ज़ियादा थका हुआ और सब से ज़ियादा बीमार वोह शख्स है जिस की ज़बान बे लगाम और दिल बे काबू हो ऐसा शख्स न सहीह बात कर सकता है न ही चुप रह सकता है, लिहाज़ा (1) थोड़ा बोलो और गुफ़्तगू के शर से पनाह मांगो क्यूंकि कुछ मुसीबतें बातों से जुड़ी हुई हैं (2) अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करो और उसे भटक जाने से बचाओ हत्ता कि वोह एक कैदी की तरह हो जाए (3) अपने दिल को ज़बान के सिपुर्द कर दो और कहो : तुम दोनों पर लाज़िम है कि नाप तोल कर बात करो ।

ख़ामोशी ना समझ का पर्दा है

जरीर शाइर के दादा ख़तफ़ी ने कहा : (1) मुझे उस नौजवान पर तअज़्जुब होता है जो बात को समझे बिगैर ही बोल कर खुद को रुस्वा कर डालता है और उस की ख़ामोशी पर भी तअज़्जुब होता है जो बात समझते हुवे भी ख़ामोश रहता है (2) ना समझ शख्स के लिये ख़ामोशी ही में पर्दा है, बेशक अक्ल का ऐब आदमी के गुफ़्तगू करने से ही ज़ाहिर होता है ।

ख़ामोश रह कर ऐबों को छुपाओ

एक शाइर ने कहा : (1) जिस क़दर हो सके ख़ामोश रह कर ऐबों को छुपाओ क्यूंकि चुप रहने में चुप रहने वालों के लिये बड़ी राहत है

(2) अगर किसी बात का जवाब न आता हो तो ख़ामोश रहा करो क्योंकि बहुत सी बातों का जवाब सिर्फ़ “ख़ामोशी” होती है।

बोलना अगर चांदी है तो चुप रहना सोना

हज़रते सय्यिदुना अबू नज्म हिलाल बिन मुक़ल्लद बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَحَد कहते हैं : (1) लोगों ने कहा : आप की ख़ामोशी महरूमि है। तो मैं ने उन से कहा : “**اَللّٰهُ** ने मेरे लिये जो मुक़दर किया है वोह मुझे बिन मांगे मिल जाता है” (2) और अगर मेरा बोलना चांदी है तो यकीनन ख़ामोश रहना सोना (Gold) है।

अब्दुल मलिक शरक्सी ने कहा : (1) जब तुम कुछ कहने पर मजबूर हो जाओ तो फिर भी न कहो बल्कि ख़ामोशी का दामन मजबूती से थामे रहो (2) अगर तुम्हारा बोलना चांदी है तो ख़ामोश रहना सोना है।

एक शाइर ने कहा : (1) ख़ामोशी को लाज़िम कर ले और बिला वज्ह मत बोल क्योंकि बातूनी शख्स थका रहता है (2) अगर तेरा येह गुमान है कि गुफ़्तगू चांदी की मिस्ल है तो येह यकीन कर ले कि ख़ामोशी सोने की तरह है।

ख़ामोशी भलाई और सलामती है

हज़रते सय्यिदुना अबुल हसन मर्वज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : (1) तेरी ज़िन्दगी की क़सम !⁽¹⁾ बुर्दबारों (या'नी बरदाशत करने

1.....ल-अमरी (या ल-अमरिक वगैरा या'नी मेरी या तेरी उम्र की क़सम) क़समे शरई नहीं, वोह तो सिर्फ़ खुदा (عَزَّوَجَلَّ) के नाम की होती है, बल्कि क़समे लुग्वी है, जैसे रब तआला फ़रमाता है : (بِالسَّيِّئَاتِ وَالرَّيْسُوتِ وَالرَّيْسُوتِ وَالرَّيْسُوتِ وَالرَّيْسُوتِ) अन्वीर और जैतून की क़सम। लिहाज़ा येह फ़रमाने आली उस हदीस के ख़िलाफ़ नहीं जिस में इरशाद हुवा कि ग़ैरे खुदा की क़सम न खाओ। (मिरआतुल मनाज़ीह, 4/337)

वालों) के लिये बुर्दबारी (कुव्वते बरदाशत) ज़ीनत है और इस की या तो आदत होती है या आदत बनानी पड़ती है (2) अगर किसी शख्स का ख़ामोश रहना नदामत या शर्मों हया की वजह से न हो तो यकीनन उस की ख़ामोशी बहुत भलाई और सलामती है।

एक शाइर ने कहा : कम बोला करो, इस तरह गुफ्तगू के नुक़सानात से महफूज़ रहोगे, ख़ामोशी की ज़मीन इस फैली हुई ज़मीन से जुदा है।

ख़ामोशी ज़बरदस्त ज़ीनत है

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : (1) जहां बोलना न हो वहां ख़ामोश रहना आदमी के लिये ज़बरदस्त ज़ीनत है (2) और सच बोलना मेरे नज़दीक क़सम खाने से ज़ियादा अच्छा है (3) और इज़्ज़त व वक़ार इन्सान की एक निशानी होती है जो उस की पेशानी पर चमकती है।

एक शाइर ने कहा : मुत्तकी व परहेज़गार शख्स अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त की ख़ातिर बात करने से बचता है हालांकि वोह दुरुस्त बोलने पर कादिर होता है।

“ख़ामोश” और “बोलने वाले” की हिक्कयत

हज़रते सय्यिदुना अबू हातिम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : दो शख्स इल्म हासिल करने लगे, जब आलिम बन गए तो एक ने “ख़ामोशी” अपना ली और दूसरा “गुफ्तगू का आदी” बन गया। दूसरे ने ख़ामोशी अपना देने वाले को एक शे’र लिख कर भेजा कि मैं ने रोज़ी कमाने में सब से कारगर ज़रीआ ज़बान को पाया है। ख़ामोश रहने वाले ने जवाब में लिखा : “मैं ने ज़बान को काबू में रखने से बढ़ कर किसी चीज़ को कमाल तक पहुंचाने वाला नहीं पाया।”

ज़बान को लगाम देने वाला ही सलामत रहता है

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उय़ैना رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : (1) बद चलन की महबूबत से अपने दिल को ख़ाली कर दो और सलाम करते हुवे उस के पास से गुज़र जाओ (2) ख़ामोशी की बीमारी में मरना तुम्हारे लिये बोलने की बीमारी में मरने से बेहतर है (3) यकीनन वोही शख़्स सलामत रहता है जो अपनी ज़बान को लगाम दे कर रखता है ।

शरीफ़ आदमी की पहचान

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन हरमह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : (1) मैं लोगों को एक मुश्किल मुआमले में देख रहा हूँ लिहाज़ा तुम एक किनारा पकड़ लो जब तक कि मुआमला अपनी इन्तिहा को न पहुंच जाए (2) क्यूंकि गुज़रे हुवे को वापस नहीं ला सकते जब ज़बान फिसलती है तो बात मुंह से जुदा हो जाती है (3) तुम हर शरीफ़ आदमी को “ख़ामोश” देखोगे और दूसरों को देखोगे कि बोल कर अपनी इज़्ज़त ख़राब करते हैं ।

बहूस-मुबाहसे में पड़ने से बेहतर

एक और शाइर ने कहा : (1) लोगों के साथ मुआफ़ी व दर गुज़र से पेश आओ और इस के लिये अपनी इज़्ज़त को वक्फ़ कर दो (2) और जब मलामत ज़ियादा होने लगे तो अपने कानों को बन्द कर लो (3) और जब फुज़ूल गोई का अन्देशा हो तो ख़ामोशी को लाज़िम कर लो (4) क्यूंकि कीलो काल करने (या'नी बहूस-मुबाहसे में पड़ने) से ख़ामोश रहना तुम्हारे लिये ज़ियादा बेहतर है ।

कामयाब कौन ?

हज़रते सय्यिदुना अबू अताहियह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं :

(1) बहुत ज़ियादा ख़ामोश रहने वाला शख्स कामयाब है और कलाम की हिफ़ाज़त करने वाले के लिये बात ग़िज़ा होती है और (2) हर बात का जवाब नहीं होता और ना पसन्दीदा बात का जवाब तो ख़ामोशी ही है ।

हज़रते सय्यिदुना अबू अताहियह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मज़ीद फ़रमाते हैं : (1) जब तुम गुफ़्तगू की अस्ल (या'नी जड़) तक पहुंच जाओ तो इस से ज़ियादा गुफ़्तगू करने में कोई भलाई नहीं (2) और बेजा गुफ़्तगू करने से इन्सान का ख़ामोश रहना ही बेहतर है ।

नेकी की बात करो या ख़ामोश रहो

एक शाइर ने कहा है : (1) नेकी की बात करो और फुज़ूल, मशकूक (या'नी शक वाली) बात, फ़ोहश कलामी और ऐबजूई मत करो । (2) ख़ामोश तब्ज़ (या'नी चुप रहने वाले), बा वकार और ग़ौरो फ़िक्र करने वाले बन जाओ और अगर बोलो तो कम बोलो और (3) बिग़ैर सोचे समझे सुवाल करने वाले को जवाब मत दो और जिस के मुतअल्लिक़ तुम से पूछा न जाए उस के बारे में मत बोलो ।

ख़ामोशी ही बेहतर है

उहैहा बिन जुलाह ने कहा (1) जब तक ख़ामोश रहना ऐब न बन जाए तो नौजवान के लिये ख़ामोशी ही बेहतर है (2) और जिस के पास मदद करने वाली अक्ल न हो उस की बात अहमक़ाना ही होगी ।

हॉट बन्द रहने में ही सलामती है

एक शाइर ने कहा : (1) जब तक तुम अपने हॉटों को बन्द रखोगे सलामत रहोगे और अगर उन्हें खोलना ही हो तो अच्छी बात करो (2) तवील ख़ामोशी इख़्तियार करने वाले का मक्सद येही होता है कि मज़म्मत व इताब (या'नी मलामत व बुरा भला कहलाए जाने) से बचा रहे। (3) लिहाज़ा तुम भी अच्छी बात करो या फिर इतनी ज़ियादा बातें मत करो जिस पर तुम्हें बुरा भला कहा जाए।

पहले तोलो बा'द में बोलो

अब्दुल्लाह बिन मुआविय्या बिन जा'फ़र कहते हैं : (1) ऐ इन्सान ! कभी कोई बात मत कर क्यूंकि तू नहीं जानता कि कौन सी बात तुझे ऐबदार कर दे (2) ख़ामोशी को मजबूती से थाम ले क्यूंकि ख़ामोशी में बड़ी हिक्मत है और अगर बोलना ही हो तो पहले तोल फिर बोल (3) जब लोग ऐसी बहूस में लग जाएं जिस से तुझे कोई सरोकार (या'नी तअल्लुक़) न हो तो किनारा कर ले (या'नी वहां से हट जा)।

बोल कर बाश्हा पछताना पड़ता है

हज़रते सय्यिदुना अबू अताहियह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : (1) अगर ख़ामोश रहना तुझे पसन्द है तो तुझ से पहले नेक लोगों को भी येह पसन्द था (2) और अगर ख़ामोश रहने पर तू एक मरतबा नदामत उठाएगा तो यकीन कर बोलने पर कई बार नदामत का सामना करेगा। (3) बेशक ख़ामोशी सलामती है जब कि बसा अवकात बोलना दुश्मनी और नुक़सान का बीज (सबब) बन जाता है। (4) जब एक नाकाम शख़्स दूसरे नाकाम शख़्स के करीब होता है तो इस से ख़सारे और नाकामी में इज़ाफ़ा ही होता है।

ज़बान के मुआमले में कञ्जूसी ही बेहतर है

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अबू अब्बलह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : (1) जब तक तुम ज़बान के मुआमले में “कञ्जूसी” करते रहोगे येह महफूज़ रहेगी लिहाज़ा इसे बे लगाम मत छोड़ो (2) ख़ामोश रह कर राज़ों को दिल में ऐसे ही पोशीदा रखो जैसे ज़बर जद (एक सब्ज़ रंग का ज़र्दी माइल कीमती पथ्थर) और नायाब मोती को छुपा कर रखा जाता है (3) क्यूंकि जो बात तुम ने भरे मजमअ में कह दी हो रहती दुन्या तक उसे वापस नहीं लौटा सकते (4) जिस तरह पिया हुआ पानी वापस नहीं आ सकता और बच्चा रेहम (या'नी पेट के अन्दर बच्चादानी) में वापस नहीं जा सकता ।

अक्लमन्द और जाहिल

एक शाइर ने कहा : (1) जिस ने ख़ामोशी इख़्तियार की उस ने हैबत का लिबास पहन लिया जो लोगों से उस की बुराइयों को छुपाए रखता है (2) अक्लमन्द की ज़बान उस के दिल में जब कि जाहिल का दिल उस के मुंह में होता है ।

इन्सान के चुप रहने का मक़्सद

एक शाइर ने कहा : ऐ सुलैमा ! (1) अपनी आदत से बाज़ आ जा और मलामत मत कर या फिर उसे मलामत कर जिसे हवादिसे ज़माना ने ऐसे गिरा दिया कि अब उठ नहीं सकता (2) मेरा नसीब मुझे हर तरह की इज़्ज़त से रोक रहा है मगर मेरी हिम्मत इज़्ज़त तक पहुंचने में कोताही नहीं करने देती (3) जब तक हालात ऐसे रहेंगे मैं ख़ामोश रहूंगा और

ज़िन्दगी भर अपने मुँह को बोलने के लिये नहीं खोलूंगा (4) अगर ख़ामोश रहने पर किसी मलामत करने वाले ने मुझे मलामत की तो मैं उस से कहूंगा : इन्सान नदामत व शर्मिन्दगी से बचने के लिये ही चुप रहता है।

तमाम ता'रीफें **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رَسُوْلِكَ** के लिये हैं जिस की तौफ़ीक़ से किताब "हुस्नुस्समत् फ़िस्समत्" मुकम्मल हुई। ख़ूब दुरुदो सलाम हों हमारे सरदार हज़रते मुहम्मद और आप की आल व अस्हाब पर।



सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के शहज़ादे और शहज़ादियां

.....शहज़ादे : प्यारे मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के तीन शहज़ादे थे जिन के अस्माए मुबारका येह हैं :

- (1) हज़रते सय्यिदुना कासिम (2) हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम
- (3) तय्यिबो ताहिर हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह (**عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ**)

.....शहज़ादियां : मुस्तफ़ा जाने रहमत **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की चार शहज़ादियां थीं जिन के अस्माए मुबारका येह हैं :

- (1) हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब (2) हज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या
- (3) हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम (4) हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा (**رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ**) ।

(الموهب اللدنية، الفصل الثاني في ذكر اولاد الكرام، 3/313)

फ़ेहरिस्त

| मज़ामीन | सफ़्हा | मज़ामीन | सफ़्हा |
|-----------------------------------|--------|---|--------|
| ख़ामोशी में नजात है | 1 | आक़ा <small>صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ</small> बहुत ज़ियादा | |
| सलामती चाहने वाला ख़ामोश रहे | 1 | चुप रहते | 10 |
| बदन पर हल्का और मीज़ान में भारी | 2 | चार बेहतरीन मदनी फूल | 11 |
| आसान इबादत | 2 | अच्छी बात करो या चुप रहो | 11 |
| ख़ामोश रहने की नसीहत | 2 | ख़ामोशी में सलामती है | 12 |
| सब से उम्दा और आसान अ़मल | 3 | हक़ बात करो या चुप रहो | 12 |
| सब से बुलन्द इबादत | 3 | जन्नत में ले जाने वाला अ़मल | 12 |
| अ़लिम की ज़ीनत और जाहिल का पर्दा | 3 | हिक़मत की अस्त | 13 |
| ख़ामोशी अख़्लाक की सरदार है | 4 | गुफ़्तगू चांदी तो ख़ामोशी सोना | 13 |
| बात दो ज़ख़ में ओंधे मुंह गिराएगी | 4 | कौन सी गुफ़्तगू चांदी है ? | 13 |
| 40 हज़ार अवलाद का इजतिमाअ ! | 5 | सोहबत के लिये मुफ़ीद शख़्स | 14 |
| अब्बा जान ! आप बोलते क्यूं नहीं ? | 5 | नबी की अ़जिज़ी मगर हमारे लिये | |
| शैतान को भगाने का नुस्खा | 6 | दर्सें इब्रत | 14 |
| हिक़मत के 10 हिस्से | 6 | इबादत की कुन्जी | 14 |
| न बोलने में नव गुन | 6 | इबादत की इब्तिदा ख़ामोशी है फिर.... | 14 |
| शैतान से जीतने का नुस्खा | 7 | पहले के नेक लोग कम गो हुवा करते | 15 |
| बिगैर पूछे जवाब मिल गया | 7 | अक्लमन्द की ज़ीनत | 15 |
| कम बोलने वाले कम हैं | 8 | ख़ामोश रहने वाला अ़लिम अफ़ज़ल या | |
| अफ़ज़ल ईमान | 8 | बोलने वाला ? | 15 |
| “दुआए मुस्तफ़ा” किस के लिये ? | 9 | चार उलमा और एक बादशाह | 16 |
| बे मिस्त अ़मल | 9 | ज़ियादा बोलने से वक़ार जाता रहता है | 16 |
| कौम के सरदार को हुक्म | 10 | ख़ामोशी के दो फ़ाएदे | 17 |

| | | | |
|--|----|--|----|
| लोगों में अन्धे बहरे गूंगे बन कर रहे | 17 | बोलना दवा की तरह है | 24 |
| ख़ामोशी के वक्त अक्ल हाज़िर रहती है | 17 | बादशाह बहराम और परन्दा | 25 |
| चार बादशाह | 18 | ज़बान एक और कान दो क्यों ? | 25 |
| उन की ज़बानों पर हिकमत भरी बातें | | ख़ामोशी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल | |
| जारी हुई | 18 | अरबी अज़़हार के तर्जमे | 25 |
| सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम ख़ामोश रहे | 18 | नफ़्स के लिये बेहतरीन सरमाया | 25 |
| ख़ामोशी ही सब्र है | 19 | तमाम भलाई ख़ामोशी और गोशा | |
| ख़ामोशी का अदना फ़ाएदा सलामती है | 19 | नशीनी में है | 26 |
| कमाले अदब की चार ख़ूबियां | 19 | दुन्या व आख़िरत में लाइके ता'रीफ़ | 26 |
| कामिल मोमिन की चार ख़ूबियां | 20 | बोल पड़ना बारह "टेन्शन" में डालता है ! | 26 |
| लोगों के दरमियान एहतियात के | | सब से बड़ा मरीज़ | 27 |
| मदनी फूल | 20 | ख़ामोशी ना समझ का पर्दा है | 27 |
| क्या बात करने वाला भी नजात | | ख़ामोश रह कर ऐबों को छुपाओ | 27 |
| पाएगा ? | 20 | बोलना अगर चांदी है तो चुप रहना सोना | 28 |
| 20 साल से चुप रहने की मश्क़ | 21 | ख़ामोशी भलाई और सलामती है | 28 |
| 40 साल तक मुंह में पथ्थर रखा ! | 21 | ख़ामोशी ज़बरदस्त जीनत है | 29 |
| फाड़ खाने वाला दरिन्दा | 21 | "ख़ामोश" और "बोलने वाले" | |
| हवा में चलने वाला आदमी | 22 | की हिकायत | 29 |
| परन्दा बोल कर फंस गया ! | 22 | ज़बान को लगाम देने वाला ही | |
| दो बेहतरीन ख़ूबियां | 23 | सलामत रहता है | 30 |
| बड़ी हिकमत | 23 | शरीफ़ आदमी की पहचान | 30 |
| ख़ामोशी सीखने की ज़ियादा ज़रूरत है | 23 | बहूस-मुबाहसे में पड़ने से बेहतर | 30 |
| बोलने से ज़ियादा सुनने की हिंस रखो ! | 23 | कामयाब कौन ? | 31 |
| इबादत के नव हिस्से ख़ामोशी में हैं | 24 | नेकी की बात करो या ख़ामोश रहो | 31 |
| आफ़ियत के नव हिस्से | 24 | ख़ामोशी ही बेहतर है | 31 |

| | | | |
|--------------------------------|----|-----------------------------|----|
| हॉट बन्द रहने में ही सलामती है | 32 | अक़्लमन्द और जाहिल | 33 |
| पहले तोलो बा'द में बोलो | 32 | इन्सान के चुप रहने का मक्सद | 33 |
| बोल कर बारहा पछताना पड़ता है | 32 | फ़ेहरिस्त | 35 |
| ज़बान के मुआमले में कन्जूसी ही | | मआख़िज़ो मराजेअ | 37 |
| बेहतर है | 33 | ❁.....❁.....❁.....❁..... | |

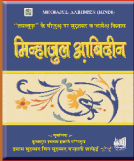
माخذومراجع

| مطبوعه | مصنف / مؤلف | نام کتاب |
|--------------------------|--|----------------|
| دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ | امام محمد بن اسماعیل بخاری علیہ الرحمہ متوفی ۲۵۶ھ | صحیح بخاری |
| دارالفکر بیروت ۱۴۱۲ھ | امام محمد بن عیسیٰ ترمذی علیہ الرحمہ متوفی ۲۵۶ھ | سنن الترمذی |
| دارالفکر بیروت ۱۴۱۲ھ | امام احمد بن محمد بن حنبل علیہ الرحمہ متوفی ۲۴۱ھ | المسند |
| المدينة المنورة ۱۴۱۳ھ | امام حافظ حارث بن ابی اسامہ علیہ الرحمہ متوفی ۲۵۶ھ | المسند |
| دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۸ھ | ابو یعلیٰ احمد بن علی موصلی علیہ الرحمہ متوفی ۲۵۶ھ | المسند |
| مؤسسة الرسالة ۱۴۰۵ھ | حافظ محمد بن سلامہ علیہ الرحمہ متوفی ۲۵۶ھ | مسند الشہاب |
| داراحیاء التراث ۱۴۲۲ھ | حافظ سلیمان بن احمد طبرانی علیہ الرحمہ متوفی ۲۵۶ھ | المعجم الكبير |
| دارالمعرفة بیروت ۱۴۱۸ھ | امام محمد بن عبداللہ حاکم علیہ الرحمہ متوفی ۲۵۶ھ | المستدرک |
| دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ | امام احمد بن حسین بیہقی علیہ الرحمہ متوفی ۲۵۶ھ | شعب الایمان |
| دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۷ھ | امام ابو حاتم محمد بن حبان علیہ الرحمہ متوفی ۲۵۶ھ | صحیح ابن حبان |
| دارالکتب العلمیہ ۱۴۰۶ھ | حافظ شیروہ بن شہر دار دلمی علیہ الرحمہ متوفی ۲۵۶ھ | فردوس الاختیار |
| دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۵ھ | جلال الدین عبدالرحمن سیوطی علیہ الرحمہ متوفی ۲۵۶ھ | جامع الصغیر |
| المکتبة العصرية ۱۴۲۶ھ | عبداللہ بن محمد ابن ابی الدنیا علیہ الرحمہ متوفی ۲۵۶ھ | الموسوعة |
| دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ | علی بن حسام الدین متقی علیہ الرحمہ متوفی ۲۵۶ھ | کنز العمال |
| دارالکتاب الاسلامی قاہرہ | ابونعیم احمد بن عبداللہ اصیہانی علیہ الرحمہ متوفی ۲۵۶ھ | تاریخ اصیہان |
| دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۷ھ | احمد بن علی خطیب بغدادی علیہ الرحمہ متوفی ۲۵۶ھ | تاریخ بغداد |
| دارالفکر بیروت ۱۴۰۶ھ | حافظ محمد بن جعفر خراطی علیہ الرحمہ متوفی ۲۵۶ھ | مکارم الاخلاق |

नेक नमाजी बनने के लिये

हर जुमा 'रात बा 'द नमाजे मगरिब आप के यहां होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ﴿﴾ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आशिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ﴿﴾ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्ज़ामात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये ।

मेरा मदनी मक्सद : "मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।" اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह के लिये "मदनी इन्ज़ामात" पर अमल और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ



ISBN 978-969-631-679-4



0125429



मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- ☞ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
- ☞ अहमदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बगीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
- ☞ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खडक, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
- ☞ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786